BA-I 24/07/20
Paper-II
Unit-5

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
N.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID: - rajgopal7755@gmail.com

Jainism; Bondage and Liberation (Lecture-I)
(जैन दर्शन बन्धन और मोक्ष) (व्याख्यान -I)

जैन दर्शन में बन्धन और मोक्ष का विचार जीव या आत्मा के सन्दर्भ मे है। जैन दर्शन के अनुसार जीव एक चेतन द्रव्य है। स्वाभाविक रूप से जीव पूर्ण एवं मुक्त है। इसमे चार प्रकार की पूर्णताएं पायी जाती है। ये है- अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य एवं अनन्त आनन्द। जीव का स्वाभाविक गुण केवल मुक्त जीवों मे दृष्टिगत है। कर्मफल के अधीन होने के कारण सांसारिक जीवों मे जो बन्धनग्रस्त है; अनन्तचतुष्टय (उपरोक्त चारो गुणो) की अभिव्यक्ति नहीं होती है। बन्धनग्रस्त अवस्था में जीव के ये गुण तिरोहित होते हैं, नष्ट नहीं होते हैं। जिस प्रकार से सूर्य संपूर्ण जगत को आलोकित करता है लेकिन मेघ और तुषार के आवरण के कारण वह जगत को प्रकाशित नहीं कर पाता है, जब इनका आवरण हट जाता है तो पुनः जगत को प्रकाशित करता है। उसी प्रकार से कर्मजन्य बाधाओं के हट जाने पर मानव अनन्तचतुष्टय से युक्त हो जाता है। एवं अपनी स्वाभाविक पूर्णता को प्राप्त कर लेता है।

जैन दर्शन के अनुसार जन्म ग्रहण करना, जीव का शरीर से संबंध स्थापित करना बन्धन है। जीव शरीर के साथ संयोग की कामना करता है। शरीर का

Scanned with CamScanner

निर्माण पुद्गल कणों से हुआ है। इस प्रकार से जीव का कर्मपुद्गलों से संयोग ही बन्धन है। कर्म पुद्गलों से संयोग होने के कारण जीव की ज्ञानशक्ति पूर्णतः सीमित हो जाती है। जैन दर्शन के अनुसार कर्म ही बन्धन का मूल कारण है। जैन कर्म को भौतिक एवं पौद्गलिक मानता है। कर्म जीव से संयुक्त होकर उसके स्वरूप को दूषित करता है। कर्म के कारण ही जीव अपनी शुद्धता से नीचे गिर कर बन्धन की अवस्था में आता है। जीव और कर्म का संबंध अनादि है।

जैन दर्शन का कर्म भौतिक एवं सक्रिय है वहीं आत्मिक दर्शन के विभिन्न संप्रदायों के कर्म सिद्धान्त अभौतिक एवं निष्क्रिय है। वह अदृष्ट या अपूर्व या ईश्वरेच्छा या ईश्वर से प्रेरित होकर जीव को बंधनग्रस्त करके उसे अपना फल प्रदान करता है। जैन दर्शन में कर्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। जीव की सम्पूर्ण शारीरिक विशेषताएँ कर्म से उत्पन्न मानी जाती है। जैन दर्शन में आठ प्रकार के कर्म को स्वीकार किया जाता है (i) ज्ञानावरणीय कर्म यह ज्ञान को नष्ट करने वाला कर्म है (ii) वेदनीय कर्म - यह सुख एवं दुख की अनुभूति कराने वाला कर्म है। (iii) दर्शनावरणीय कर्म - विश्वास को नष्ट कराने वाला कर्म है। (iv) मोहनीय कर्म :- यह अज्ञान या मोह पैदा करने वाला कर्म है (v) गोत्र कर्म :- यह जीव के जन्म का गोत्र निर्धारित करने वाला कर्म है। (vi) आयुष्कर्म :- यह कर्म जीव को आयु निर्धारित कराने वाला कर्म है। (vii) नाम कर्म - किसी व्यक्ति का नाम निश्चय होता है। (viii) अन्तराय कर्म : यह बाधाएँ पैदा करने वाला कर्म है। कर्म जीव के अंदर घुस कर उसे जन्म लेने के लिए बाध्य करता है। जैसे जल दूध से संयुक्त हो जाता है वैसे ही कर्म जीव से संयुक्त हो जाता है। जीव अपने कर्मों के अनुसार शरीर धारण करती है। जीव के पूर्व कर्मों से वासनाएँ उत्पन्न होती है। वासनाओं को तृप्त करने के लिए जीव शरीर से संबंद्ध होती है।

Scanned with CamScanner

जीव कर्म अनादि अविद्या के कारण करता है। इस प्रकार से अन्य भारतीय दर्शन के समान जैन दर्शन भी अविद्या को बन्धन का मूल कारण मानता है। अविद्या के कारण जीव का वास्तविक स्वरूप तिरोहित हो जाता है और उसमें 'मिथ्या दर्शन' उत्पन्न हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप जीव अपने वास्तविक स्वरूप से नीचे गिर जाता है। जीव के वास्तविक स्वरूप से नीचे गिरने पर क्रोध, मान, मोह और लोभ जैसी कुप्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं। इन्हें 'कषाय' कहते हैं। कषाय 'योग' द्वारा कर्मपुद्गल को जीव से संयुक्त करते हैं। यहाँ योग का तात्पर्य कायिक वाचिक एवं मानसिक स्पन्दन से है। इस प्रकार से जैन दर्शन में मिथ्या दर्शन, अधोगति, प्रमाद, कषाय एवं योग बन्धन के कारण हैं।

जीव की ओर कर्मपुद्गल का प्रवाह आस्रव कहलाता है। आस्रव जीव के स्वरूप को नष्ट कर बन्धन की ओर ले जाता है। जब ये पुद्गल कण जीव में प्रवेश हो जाते हैं तो उस अवस्था को बन्धन कहा जाता है। आस्रव के दो प्रकार हैं - भावास्रव और द्रव्यास्रव। जीव में कर्मपुद्गल के प्रवेश से पहले जीव के भावों में जो परिवर्तन होता है उसे भावास्रव कहा जाता है। जीव में कर्मपुद्गलों का प्रवेश हो जाना 'द्रव्यास्रव' है। भावास्रव एवं द्रव्य आस्रव के आधार पर जैन दर्शन में बन्धन के दो भेद हैं। भावबन्ध एवं द्रव्यबन्ध जीव में कर्मपुद्गलों के प्रवेश से पहले जो भावास्रव उत्पन्न होता है उसके पश्चात जो बन्धन होता है उसे भावबन्ध कहते हैं। जीव में कर्मपुद्गलों के प्रवेश होने पर जीव में द्रव्यास्रव उत्पन्न होता है। उसके बाद जीव का जो बन्धन होता है उसे द्रव्य-बन्ध कहते हैं।

Scanned with CamScanner